अध्याय

14

एक कहानी यह भी

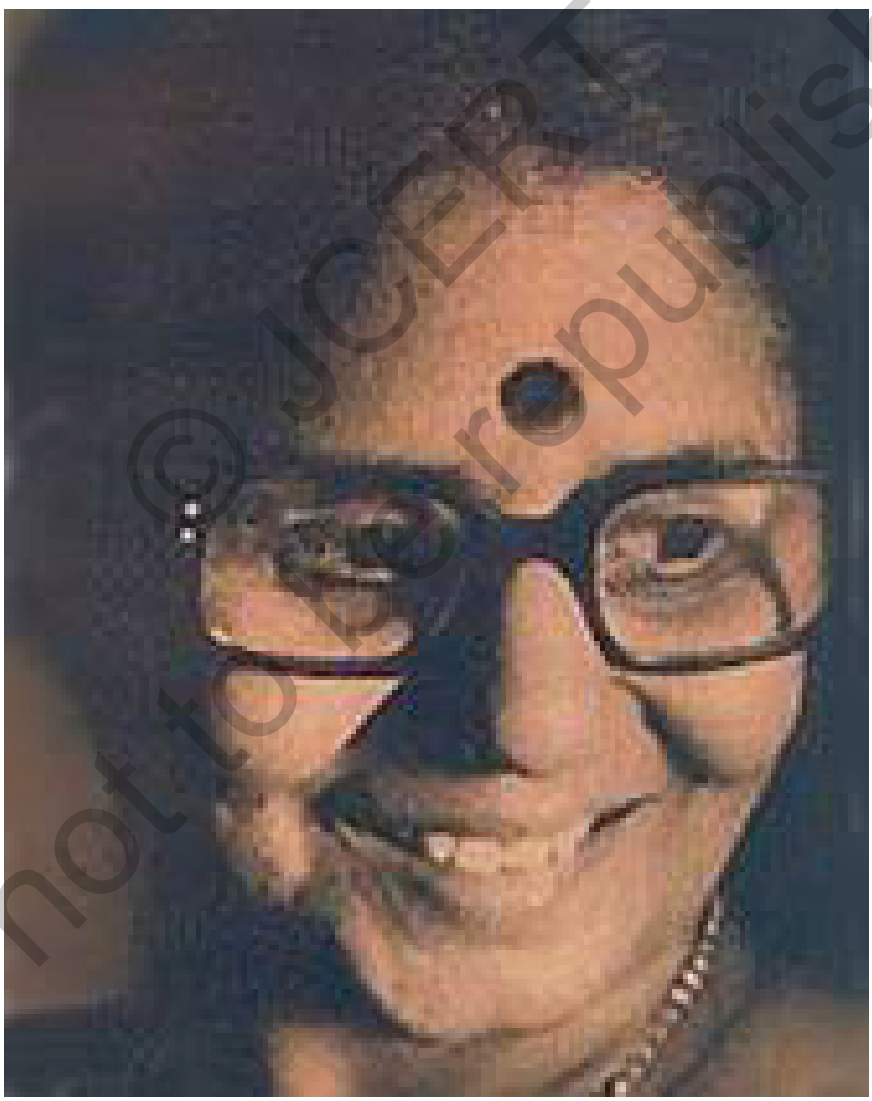

मन्नू भंडारी

© JCERT not to be republished

लेखिका- परिचय

1. मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। उन्होंने एम .ए तक की शिक्षा प्राप्त की। काफी समय तक वह दिल्ली के मिरांडा हॉउस में अध्यापन कार्य में संलग्न रही।
2. लेखन का संसार उन्हें विरासत में मिला ।उनके पिता सुख सम्पतराय भी एक जाने -माने लेखक थे।
3. मन्नू भंडारी नई कहानी आन्दोलन की सशक्त लेखिका हैं। उन्होंने कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में लेखन किया।
4. उनकी रचनाओं का मुख्य विषय आम आदमी की पीड़ा, अकेलापन, घुटन, उब, संत्रास आदि है।
5. उनकी प्रमुख रचनाएँ -एक प्लेट सैलाब, मैं हार गयी,यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ, अकेली (कहानी -संग्रह)। आपका बंटी, एक इंच मुस्कान, महाभोज (उपन्यास)। एक कहानी यह भी (आत्मकथा)। बिना दीवारों के घर (नाटक)। रजनीगंधा, निर्मला, स्वामी, दर्पण (फिल्म-पटकथा) आदि।
6. पुरस्कार -हिंदी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी सम्मान, व्यास सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य पुरस्कार आदि।
7. मन्नू भंडारी की भाषा सहज,सरल एवं भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। उनकी रचनाओं में बोल-चाल की हिंदी भाषा के साथ-साथ लोकप्रचलित उर्दू, अंग्रेजी, देशज शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है।

पाठ -परिचय

'एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी की 'आत्मकथा'का एक अंश है। जिसमें क्रम के अनुसार वर्णन न करके लेखिका ने कुछ प्रमुख घटनाओं एवं पात्रों के आधार पर कथ्य का वर्णन किया है। जो उनके आगामी लेखन कार्य में प्रेरणा स्त्रोत बने। इसमें उन्होंने अपनी किशोरावस्था से लेकर अपने पिताजी की मनोदशा एवं अपनी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के स्नेह का सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है।

लेखिका का जन्म भले ही मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ था लेकिन उनकी यादें अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले में स्थित दो मंजिला मकान से जुड़ी हुई थी। लेखिका के पिता आरम्भ में इंदौर में रहते थे और वहां सुखी सम्पन्न थे। किसी नजदीकी व्यक्ति के विश्वासघात की वजह से आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण अजमेर आ गए।उनके पिता बेहद क्रोधी, ज़िद्दी और शक्की स्वभाव के थे तथा बात- बात पर लेखिका की माँ तथा अन्य बच्चों पर अपना क्रोध उतारा करते थे।

पाँच भाई बहनों में लेखिका सबसे छोटी थी। जन्म से ही काली होने के कारण सदैव इनकी गोरी बहन से तुलना की जाती और हर क्षेत्र में इन्हें हीनता का अनुभव कराया जाता। लेखिका

© JCERT not to be republished

कहती हैं कि इसी हीनता बोध ने उनमें लेखन के बीज बो दिए और यही कारण है कि आज भी जब कोई उनके लेखन की प्रशंसा करता है तो वह आत्मसंकोच में डूब जाती हैं।

पढ़ाई के दिनों में सावित्री गर्ल्स कॉलेज की हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने उन्हें हिंदी साहित्य से परिचय कराया तथा उनमें साहित्य के प्रति रुचि पैदा की। आजादी के आंदोलनों में लेखिका ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। हड़ताल, जुलूस, भाषण आदि में लेखिका सबसे आगे रहती थी। वह छात्र-छात्राओं की रोल मॉडल बन गयी थी।

एक बार जब इनके अजमेर चौराहे पर भाषण देने की बात का पता इनके पिता जी को अपने मित्र के द्वारा शिकायत के लहजे से की जाती है तो वे लेखिका से काफी रुष्ट होते हैं। उसी दिन किसी और मित्र से उसी भाषण में लेखिका की प्रशंसा से वो गद-गद हो उठते हैं।

लेखिका एक प्रसंग का उल्लेख करती हैं कि 1947 के मई महीने में कॉलेज ने लेखिका और उनके कुछ साथियों को हुड़दंग के कारण थर्ड ईयर में प्रवेश पर रोक लगा दी गयी तो लेखिका और उनके साथियों द्वारा इतना हुड़दंग मचाया गया कि मजबूरन कॉलेज को प्रवेश लेना पड़ा। उससे उनके मन को इतनी खुशी नहीं हुई जितना आजादी मिलने की खुशी से। उन्होंने देश की आजादी को शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि और गौरव का दिन बताया है।

शब्दार्थ

© JCERT not to be republished

प्रश्न -अभ्यास

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर :-लेखिका के ऊपर उनके पिता जी और उनकी हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का गहरा प्रभाव पड़ा। पिताजी से उन्होंने घर और समाज दोनों जगह पर प्रतिष्ठा बनाये रखने की विचारधारा को अपनाया।शीला अग्रवाल ने उन्हें हिंदी साहित्य और साहित्यकारों के प्रति मन में रुचि उत्पन्न कर उनमें लेखन की चिंगारी जागृत की।लेखिका के व्यक्तित्व को निखारने में डॉ अम्बालाल की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रश्न 2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भठियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर:-लेखिका के पिताजी का मानना था कि

रसोईघर में महिलाओं की नैसर्गिक प्रतिभा का ह्रास होता है तथा वो रसोई के कामों में उलझकर अपनी कला, प्रतिभा को खो देती हैं। इसलिए लेखिका के पिता ने रसोईघर को भठियारखाना कहा है।

प्रश्न 3. वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आंखों पर विश्वास हो पाया और न कानों पर ?

उत्तर:-लेखिका कॉलेज के दिनों में क्लास छोड़कर राजनैतिक आंदोलनों यथा-जुलूस, भाषण आदि में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी।इसी कारण कॉलेज के प्रिंसिपल ने उनके घर पर लेखिका के ऊपर अनुशासनात्मक कार्यवाही संबंधी एक पत्र भेजा जिसे पढ़कर पिताजी क्रोधित हो गए। लेकिन जब उन्हें पता चला कि लेखिका के एक इशारे पर लड़कियां कॉलेज के बाहर आकर नारे लगाते हुए आंदोलन करने लगती हैं तो वे खुशी के मारे गद-गद होकर लेखिका की माँ को बता रहे थे। इसी बात पर लेखिका को विश्वास नहीं हुआ की पिताजी मेरे किस कार्य से खुश भी हो सकते हैं!

प्रश्न 4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:-लेखिका और उनके पिता के विचारों में टकराहट का मुख्य कारण यह था कि जहां उनके पिताजी कहते थे कि स्त्री की शिक्षा घर की चारदीवारी के भीतर ही सीमित हो वहीं लेखिका खुले विचारों वाली थी। वह उन्मुक्त विचरण करती रहती थी।

उनके पिता का मानना था कि लड़कियों का विवाह एक निश्चित सीमा में कर दिया जाए वहीं लेखिका को विवाह की कोई जल्दी नहीं थी।

लेखिका का सरेआम सड़कों पर नारे लगाना, भाषण देना, जुलूस निकालना आदि पिताजी को बिल्कुल पसंद नहीं था वहीं लेखिका इन सब कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी।

पिताजी जहाँ एक ओर परम्परावादी थे वहीं लेखिका उन बंधनों से मुक्त होना चाहती थी।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिये।

उत्तर:- उस समय पूरे भारत में 'भारत छोड़ो आंदोलन' चरम पर था। घर में होने वाली गोष्ठियों से मन्नू भंडारी को देश में चल रहे स्वाधीनता-आंदोलनों से जुड़ी गतिविधियों का पता चलता रहता था। विद्यालय की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल भी उन्हें इन आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित करती रहती थी।

उस समय मन्नू भंडारी के एक संकेत पर सारी लड़कियां बाहर आकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हड़ताल करवाने, जुलूस निकालने तथा भाषण देने में सहयोग देती थी। इन सभी कार्यों में भाग लेने के कारण उनपर कई बार अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की गई। अतः स्वाधीनता आंदोलन में मन्नू भंडारी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

© JCERT not to be republished